International Indexed & Referred Research Journal, March, 2012. ISSN- 0975-3486, RNI-RAJBIL 2009/30097;VoL.III *ISSUE-30

शोध पत्र- हिन्दी

अब्दुल बिस्मिल्लह के उपन्यासों में समाज में नारी का स्थान

* डॉ. सत्तारभाई एस. वहोरा

March, 2012

* Govt. Arts College, Jhaghadia, Bharuch (Gujarat)

अब्दुल बिस्मिल्लाह समकालीन कथाकार के रुप में प्रसिद्ध हैं। उन्हाने पाँच कहानी.संग्रह, चार उपन्यास तथा बाल.साहित्य और दो नाटक लिखे हैं । झीनी झीनी बीनी चदरिया उपन्यास को सन 1987 का सोवियत पुरस्कार (नेहरु एवोर्ड) तथा मध्यप्रदेश का ''अखिल भारतीय केडिया पुरस्कार'' भी प्राप्त हुआ हैं। इस उपन्यासों में कई नारी पात्र हैं.अलीमुन, नसीबुन बुआ, कमरून, नजबुनिया, रेहाना, महरून आदि। इस उपन्यास में पुरुष प्रधान समाज में सभी नारी की स्थिति एक सी बताई हैं।

प्रत्येक को अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए पुरूषों को प्रसन्न रखने का प्रयास करना पड़ता हैं। इसमें भी उपर से उन पर कई प्रकार के प्रतिबंध लग जाते हैं। पर्दा तो है ही इस्लामी रस्मों रिवाज के मुताबिक। जिसके कारण बाह्य समाज से अपरिचित रह जाती हैं। शिक्षा का तो नामोनिशान तक नहीं हैं। स्त्री और शिक्षा' जहां पुरूष स्वयं अनपढ़ अनुमत हो वहॉ स्त्रियों को शिक्षा का अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता हैं। स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों का इस में स्पष्ट संकेत किया हैं। साथ ही साथ स्त्री के बिना घर की क्या दुर्दशा हो सकती है उसका भी उसने भान कराया हैं।

इस उपन्यास में संतानोत्पति ही स्त्री का एक मात्र कार्य नहीं हैं, अपितु अन्य अनेक छोटी–बड़ी जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी वह प्रतिक्षण पुरुष द्वारा शोषित ही रहती हैं। सदियों से पुरूषों ने स्त्रियों को आगे बढ़ने नहीं दिया। यही नहीं, उनके स्वतंत्र विचारों को प्रत्येक समाज में बुरी तरह से कुचल दिया हैं ।

इस उपन्यास में जहाँ एक और अलीमुन की टी.बी. की बीमारी का उल्लेख किया हैं वहाँ दूसरी और इस्लामी रस्मों रिवाज के मुताबिक स्त्रियों की बंदीश की ओर भी ध्यान केन्द्रित किया हैं। उन्हें पर्दे में ही नहीं, बल्कि घर की चार दीवार में बंद रहना पड़ता हैं। केवल संतानोत्पति और गृहकार्य ही स्त्री का एक मात्र कर्तव्य समझा जाता रहा हैं।

परिवर्तनशील युग में मुसलमान समाज का भी कदम से कदम मिलाकर चलना अहम समझते हुए यह स्पष्ट किया है कि धर्म की शिक्षा के साथ–साथ भौतिक.व्यावहारिक, सामाजिक, आर्थिक ज्ञान भी अत्यधिक जरूरी हो गया हैं। सारी दुनियाँ में जब कि लडकियाँ पढ़–पढ़कर क्या से क्या बन रही है, हमारे घरों की लडकिया सिर्फ कुरान पढ़–पढ़कर पर्दे में बैठी कतान फेर रही है। उन्हें टी.बी. हो जाता है और उनकी ज़िन्दगी ज़हर हो जाती है । बात–बात में हमारे यहाँ तलाक हो जाता हैं मैं यह नहीं कहता कि वे अपना काम न करे, करे, लेकिन पुश्तेनी धन्धे के साथ–साथ हममें तरक्की करती हुई दुनिया के साथ भी चलना होगा तभी अपने हक़ के लिए लड़ने का ज़ज्बा हमारे भीतर पैदा हो सकता है, वरना नहीं अलीमुन की बीमारी का मुख्य कारण यही है कि घर की चार दीवारो में बन्द रहने वाली नारी का किसी प्रकार का विकास अत्यन्त मुश्किल है। जब कि खुले वातावरण में देखना, जानना, सीखना और सक्रिय रहना किसी भी व्यक्ति को एकाकी जीवन की उक्ताहट से मुक्ति अवश्य दिलाता है । इसीलिए उसके बीमार रहने की गुंजाइस कम रहती हैं।

अलीमुन अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करने वाली स्त्रियों में होने पर भी प्रतिव्रता एवं धार्मिक विचार से ओतप्रोत है । वह अपनी संतान में अच्छे गुणों को भरना चाहती और जानती है। जीवन में संघर्षो से डरने वाली एवं दूर रहने वाली नारी सहज भावना उसमें हैं। दूसरी और कमरून स्वामिभानी स्त्री के रूप में हमारे सामने आती है। अपने नशेमन पति लतीफ़ के कई अत्याचारों को सहने के बावजूद उफ़ तक नहीं करती, लेकिन नारी की सहनशक्ति की भी एक सीमा होती हैं। अंततोगत्वा लतीफ़ के द्वारा नशे की हालत में उसे तलाक दे दिया जाता है । तब भी वह अपने पति एवं बच्चों के लिए प्रतिक्षण तडपति तरसती एवं ललायित रहती है ।

यहाँ कमरून की स्थिति यह हैं कि बेचारी मजबूर औरत समाज की निगाहों से गिर जाती है और अंत में लतीफ भी उसे दूसरी शादी के बाद स्वीकार अवश्य कर लेता है। नजबुनिया जो कि उदारतावादी विचारों के प्रणेता रऊफ चाचा की इकलौती लाड़ली पुत्री होने के बावजूद तलाकशुदा औरत है । जिसका पुनःविवाह मतीन से करवाकर विधवा विवाह की नहीं अपितु त्यक्ता विवाह की एक नवीन परम्परा को इस्लामी कानून के मुताबिक स्पष्ट एवं सिद्ध किया है। मतीन का भी दूसरे विवाह के लिए उसकी टी.बी. ग्रस्त बीवी के द्वारा सहमति प्राप्त होती है।

रेहाना रूढिचुस्त समाज के अज्ञान लोगों के कारण अंधविश्वास एवं अनैतिक मान्यताओं की बुरी तरह से शिकार हो जाती है। कई तरह की दरगाहए मन्नतो के बावजूद उसकी मानसिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आता। लेकिन झाड. फूक वालों के कारण ही वह मृत्यु को प्यारी हो जाती है। मुस्लिम समाज में इसका प्रचालन है ऐसा नहीं, बल्कि प्रत्येक समाज आज भी उन मान्यताओं का शिकार है और संसार में जब तक

लालची एवं शेठ लोग विद्यमान हैं। इनका विनाश असंभव है इसका कारण यही है कि उच्च कुलीन वर्ग भी इसमें अधिकांशतः परिस्थितियों का दास बनकर फंसता है। नसीबुन बुआ तो समाज की बुआ है। उसका स्वाभाव ही उसकी प्रतिष्ठा एवं परिचय का परिचायक है । बिना बुलायें भी अच्छे.बुरे प्रसंगो पर प्रत्येक के घर उपस्थित हो जाना उपना कतर्व्य समझती है।

ज़हरबाद अब्दुल बिस्मिल्लाह का आत्मकथात्मक उपन्यास है । इसका नायक मै एक सात.आठ साल का बच्चा है जो अपने अब्बा और अम्माँ के निरन्तर झगडों के बीच पलता है । नौकरी छुट जाने और अब्बा के निकम्मेपन के कारण ''मैं'' की अम्माँ हर वक्त भुन–भुनाती रहती हैं .काम न धन्धा बस दिन. रात बंसी के पीछे खाली मछरी खाकर पेट भरेगा नए लाज नहीं आती कि महरिया कमाये और मरद बैठकर खाये। लेकिन अब्बा इन शब्दों को सहन नहीं कर सकते और गाली देने लगते है .हरामजादी मुँह चलाती है ।

जिन्दगीभर कमाकर ख़िलाता रहा, कीमती कपडों और गहनों से लादे रहा तब मरद की मरदानगी नहीं देखी गयी। अब्बा की पहले की स्थिति इससे भिन्न थी । बावजूद बाप की जमींदारी के अब्बा शौकिया जंगल विभाग की नौकरी करते थे जो अधिक दिन नहीं चलती। नौकरी से साथ.साथ जमींदारी भी ख़त्म हो जाती हैं और फिर शुरू होता है लगातार बढ़ती हुई गरीबी और विस्थापन का सिलसिला । दूर.पास के सारे रिश्ते टूटते चले जाते है। अम्माँ के गहने रेहन रखकर किया गया चमड़े का व्यापार मुस्तूमियाँ के बड़े व्यापार के मुँह का निवाला बन जाता है और भूखों मरने की नौबत आ जाती है. तब अम्माँ ने टोपरा उठाया था अम्माँ सुबह–सुबह उठती, झिरिया से पानी लाती, बर्तन मांजती, खाना बनाती और टोपरे में किराये का चन्द सामान सजाकर कभी धमन गाँव, कभी बिजौरी और कभी जोगी टिकरिया के लिए निकल जाती ।

अफसोस इस बात पर होता है कि तोहमत उस संघर्षशील औरत पर यह लगाई गई कि वह चरित्रहीन है । जब कि उस चिरत्रहीनता का कोई प्रमाण नहीं था। उस परिश्रमी और पति परायण स्त्री के अन्त को बेटे ने जिस रूप में देखा उसका जायजा उसी के शब्दो में . एक घाटी में पकरी के पेड़ के नीचे अम्माँ टेढी–मेढी होकर पडी थीं। मुँह उसका खुला था और कत्थे. रंगे दाँत फैले हुए थे । पेट पिचक गया था तथा टाँगो पर से धोती सरक गयी थी । उनके विषेले जिस्म पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। और रह–रहकर पकरी के कच्चे फल उसके निस्पंद शरीर पर पट–पट गिरे रहे थे । उस वक्त एक तेज चीख मेरे मुँह से निकली थी और मेरी आँखो का सब्र टूट गया था लेकिन लग रहा था कि गालों पर जो बह रहा है, वह आँसू नहीं है, ज़हर है .अभिशप्त और उपेक्षित जिन्दगी का। लेकिन उपन्यास ''मैं'' की खुली आँखो के सामने केवल परिवार और उसका रिश्ता ज़हरबाद न था, समूचा परिवेष एक ज़हरबाद बनकर फैला हुआ था।

संदर्भ ग्रंथ

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह झीनी.झीनी बीनी चदरिया ई.स.1986 राजकमल प्रकाशन दिल्ली 2. वही जहरबाद ई.स.1988 वाणी प्रकाशन दिल्ली